सत्र 2024–25

Madhyma Certificate in Performing Art – I Year (M.D.P.A.)
Private

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory – I	100	33
02.	Practical – Demonstration & Viva	100	33
	Grand Total	200	66

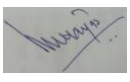

सत्र 2024–25
स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट प्रथम वर्ष
तबला–शास्त्र

समय : 3 घंटे

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

श्रुति की परिभाषा तथा शुद्ध एवं विकृत 12 स्वरों की जानकारी। आलाप, तान, सरगम, एवं लक्षण गीत की परिभाषा।

इकाई 2

पाठ्यक्रम में अब तक सीखे गए तालों के अतिरिक्त निम्नांकित तालों के ठेकों को दुगुन, चौगुन में लिखना–झूमरा, चौताल, सूलताल।

इकाई 3

तबले की उत्पत्ति की संक्षिप्त ऐतिहासिक जानकारी। दिं, त्रक, घ्ड़ान, क्ड़धातिट, क्ड़ान, घेघेतिट इन बोल समूहों की जगह तथा उनकी निकास विधि की जानकारी।

इकाई 4

उदाहरण सहित संक्षिप्त जानकारी–ग्रह, मुखडा मोहरा लग्गी, तिहाई (दमदार एवं बेदम), सरल परन, पेशकार।

इकाई 5

अभ्यास किए हुए निम्नालिखित कायदे व रेले को चार पल्टों सहित ताल लिपि में लिखने का ज्ञान।

(अ) धाति धागे नधा तिरकिट। धाति धागे तिन किन।

(ब) धाऽतिट घिडनग धाऽतिट घिडनग। धाऽतिट घिडगन तीना किड़नग।

रूपक, त्रिताल, तथा झपताल में दो–दो मुखड़े लिखने का अभ्यास।

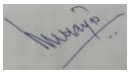

सत्र 2024–25
स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट प्रथम वर्ष

क्रियात्मक

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

1. प्रथमा परीक्षा हेतु निर्धारित तालों के अतिरिक्त–झूमरा, चौताल तथा सूलताल के ठेके हाथ से ताली देकर पढ़ना एवं तबले पर बजाना।

2. दिं, त्रक, कड़ान, क्डधातिट, घेघेतिट, घ्ड़ान– इन बोलों को तबलें तथा बांयें पर निकालना।

3. प्रथमा (प्रथम तथा द्वितीय वर्ष) के कायदों के अतिरिक्त निम्न कायदे व रेले को चार पल्टे तथा तिहाई के साथ चौगुन में बजाना (त्रिताल में)।
   (अ) धाति धागे नधा तिरकिट। धाति धागे तिन किन।
   (ब) धाऽतिट घिडनग धाऽतिट घिडनग। धाऽतिट घिडगन तीना किड़नग।
   (स) धागेनधा तिरकिट धिनगिन धागेनधा तिरकिट।
   (द) धाऽतिर किटधाऽ तिट घेन धाऽति घेन तिन केन।
4. रूपक, त्रिताल तथा झपताल में दो–दो मुखड़े व तिहाईयॉ।
5. लहरे के साथ पाठ्यक्रम के 6, 7, 8, 10 मात्राओं के ठेके बजाना तथा उनकी दुगुन चौगुन करना।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा

सत्र 2025–26

Madhyma Diploma in Performing Art (M.D.P.A.)
Final Year
(Private)

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory – I	100	33
02.	Practical – Demonstration & Viva	100	33
	Grand Total	200	66

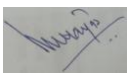

सत्र 2025–26

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु

मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट अंतिम वर्ष

तबला (शास्त्र)

समय : 3 घंटे

अंक योजना	
पूर्णांक	**न्यूनतम उत्तीर्णांक**
100	**33%**

इकाई 1

तबला वादक के गुण–दोष। काल, मार्ग, क्रिया, तथा अंग की संक्षिप्त जानकारी। प्रायोगिक पाठ्यक्रम में सीखे गये विभिन्न रचना प्रकारों को ताल लिपि में लिखने का अभ्यास।

इकाई 2

मुगल काल से अब तक के संगीत का संक्षिप्त इतिहास तथा तबले के घरानों की संक्षिप्त जानकारी।

इकाई 3

गीत के अवयव–स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग, की जानकारी। निम्नलिखित पर टिप्पणियां–परन (चक्करदार तथा फरमाईशी), उठान, गत, स्वतंत्र वादन, साथ–संगति खुले तथा बन्द बोल।

इकाई 4

पिछले वर्षो में सीखे गये तालों के अतिरिक्त धमार तथा सवारी (15 मात्रा) तालों की दुगुन तथा चौगुन काललिपि में लिखना। रूपक, झपताल, एकताल, इन तालों के ठेके तिगुन की लयकारी में काललिपि में लिखना।

इकाई 5

विष्णु दिगम्बर काललिपि पद्धति की संक्षिप्त जानकारी। तथा पाठ्यक्रम के तालों को विष्णु दिगम्बर काललिपि में लिखना।

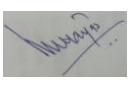

सत्र 2025–26
स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट अंतिम वर्ष
क्रियात्मक

अंक योजना	
पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33%

1. तीनताल व झपताल में लहरे के साथ पेशकार, कायदे, रेले, मुखड़े, तिहाई, तथा सरल परन, चक्करदार परन के साथ स्वंतत्र वादन तथा हाथ से ताली देकर पढ़न्त।
2. तीनताल में :–(अ) बनारस घराने का कोई एक कायदा चार पल्टे, तिहाई सहित।

   (ब) धाऽतिर किटतक धिरधिर किटतक धाऽतिर किटतक तीनाकिटतक, रेला चार पलटों व तिहाई सहित बजाना।
3. रूपक में सरल परन लहरे के साथ बजाना। तथा एकताल में दो मुखड़े व दो तिहाई लहरे के साथ बजाना।
4. चौताल, धमार, सूलताल, इन तीनों तालों को खुले हाथ से तबले पर बजाना।
5. दादरा तथा कहरवा में चार–चार लग्गियां तथा तिहाई।
6. विलंबित एकताल एवं तिलवाड़ा, ठेके बजाने का अभ्यास तथा त्रिताल, एकताल का द्रुत ठेका तैयारी के साथ बजाना।

:संदर्भ सूचीः

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा